Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part-II (Hons.) P-III

Topic: Unit-II (a) Balban.

Lecture No. 11.

Date: 09.11.2020

बलबन (1265-86 ई०):

बलबन भी अपने पूर्वगामियों की तरह इल्बरी जाति का था। उसके राजनीतिक जीवन का आरंभ 1232 ई० में इल्तुतमिश के दास के रूप में हुआ। वह इल्तुतमिश द्वारा गठित 'चहलगानी' दल का सदस्य था। उसने 1265 ई० में नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद सुल्तान का पद ग्रहण किया।

बलबन के राज्यारोहण के समय दिल्ली सल्तनत कई प्रकार के आन्तरिक तथा बाह्य संकटों से घिरी हुई थी। पश्चिमोत्तर सीमांत पर मंगोलों के आक्रमण के फलस्वरूप पंजाब के कुछ हिस्सों पर उनका अधिकार हो गया था।

दूसरी तरफ, सामंतवर्ग अनुशासनहीन तथा उद्दंड हो गया था तथा सामान्य प्रशासन ढीला पड़ गया था। अतः इन तमाम समस्याओं का समाधान तभी संभव था जब सामरिक तथा असैनिक शक्तियों से युक्त शक्तिशाली शासक दिल्ली की गद्दी पर प्रतिष्ठित होता।

संभवतः बलबन दिल्ली का एकमात्र सुल्तान है जिसने राजत्व संबंधी अपने विचारों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया। बलबन के राजत्व सिद्धान्तों का स्वरूप और सार पर्शिया के राजत्व से प्रेरित था।

उसके राजत्व सिद्धान्त में राजा को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि - 'निआबते खुदाई' माना गया। बलबन के अनुसार वह मान-मर्यादा की दृष्टि से केवल पैगम्बर के बाद है। राजा ईश्वर का प्रतिबिंब ('जिल्ले जल्लाह') है और उसका हृदय दैवी प्रेरणा और कृपा का भंडार है। अपने राजसी दायित्व पूर्ण करने के लिए वह निरंतर ईश्वर से प्रेरित और निर्देशित होता रहता है।

इस विचारधारा का अर्थ यह था कि राजा की शक्ति का स्रोत सामंतवर्ग और जनता नहीं, बल्कि केवल ईश्वर है और फलस्वरूप उसके कार्य सार्वजनिक जाँच के अधीन नहीं है।

Continue ...